शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

शशिप्रभा शास्त्री के उपन्यासों के कथ्य का अनुशीलन

कंचन बाला (शोधार्थी)
चौ. बल्लूराम गोदारा राजकीय कन्या महाविद्यालय
श्रीगंगानगर, बीकानेर (राजस्थान), भारत

शोध संक्षेप

गद्य के आविर्भाव के साथ ही उपन्यास विधा ने हिन्दी पाठकों के समक्ष अपनी गहरी पैठ बनाई। सेठ-साहूकारों राजा-महाराजाओं, महल-हवेलियों, तिलस्म-एय्यारियों जैसे-कथा प्रसंगों को समेटता यह हिन्दी गद्य रूप हिन्दी प्रेमियों में उपन्यास के रूप में प्रसिद्ध हुआ। ऐतिहासिक, राजनैतिक, सामाजिक-सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक, आँचलिक एवं राष्ट्रीय भावों के पड़ावों को पार करती यह गद्य विधा समय-दर-समय नवीन कथ्यों, मूल्यों, संदर्भों एंव विमर्शों को लेकर आगे बढ़ी। जैसे-जैसे समाज में बदलाव आते गये वैसे-वैसे उपन्यास कथा-कलेवर का क्षेत्रफल भी तमाम तब्दीलियों के साथ व्यापक-विस्तृत होता गया। इसी वैचारिक बदलाव, बढ़ाव एवं फैलाव के फलस्वरूप आज हम दलित उपन्यास, किन्नर उपन्यास, आदिवासी उपन्यास, वनवासी उपन्यास, विस्थापन उपन्यास एवं नारी विमर्शीय उपन्यास जैसे नवीन आधुनिक वैचारिक भावयुक्त उपन्यासों से रूबरू हो रहे हैं। इन्हीं वैचारिक पृष्ठभमि में हिन्दी साहित्य के छठे दशक में नारी अधिकारों की हिमायत करने वाली अनेक महिला उपन्यासकारों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई, जिसमें शशिप्रभा शास्त्री एक महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में शशिप्रभा शास्त्री के उपन्यासों के कथ्य पर विचार किया गया है।

भूमिका

सन् 1923 में मेरठ में जन्मी श्रीमती शास्त्री हिन्दी कथा साहित्य की बहुविद् रचनाकार हैं। उन्होंने हिन्दी के प्रत्येक कथा रूप में अपनी लेखनी चलाई, परन्तु उपन्यास विधा में उन्हें विशेष ख्याति मिली। उन्होंने अपने उपन्यासों के माध्यम से परम्परागत एवं आधुनिक स्त्री रूप को हाशिये से उठा कर केन्द्रीय विषयवस्तु बना स्त्रीवादी उपन्यासों को नवीन आयाम दिये। डॉ. हरिशंकर दुबे के शब्दों में, "नारीवादी उपन्यासकार के रूप में शशिप्रभा की कीर्ति, सुयश और महत्त्व निर्विवाद है। आपने विभिन्न उपन्यासों के माध्यम से निम्न वर्ग, मध्यम वर्ग तथा उच्च वर्गीय नारी के मन को, उसके जीवन को, संवेदनाओं को और उसके जीवन में आने वाली विभिन्न समस्याओं को विभिन्न दृष्टिकोणों के आधार पर हमारे समक्ष प्रस्तुत किया।"1 शशिप्रभा शास्त्री एक आधुनिक संवेदनशील उपन्यासकार हैं। उनके उपन्यास मुख्य रूप से कथ्य की विविधता के लिए जाने जाते हैं। उनकी लेखनी ने स्त्री-विमर्श का जो कथापट तैयार किया, वह हिन्दी स्त्री साहित्य को मिला रिक्थ है, जिस पर स्त्री लेखन निरन्तर प्रवाहमान है।

शशिप्रभा शास्त्री के उपन्यासों का अनुशीलन

'वीरान रास्ते और झरना' उपन्यास में हीन भावना से त्रस्त युवती एवं अनमेल विवाह से उपजे दुष्परिणामों पर आधारित है। 'अमलतास' उपन्यास में स्वतन्त्रतापूर्व रजवाड़ों की नारियों की व्यवस्था को उजागर किया गया है। दो पुरूषों और एक नारी के त्रिकोणात्मक प्रेम को आधार बनाकर लिखा 'नावें' उपन्यास अतीत जीवन की व्यथा में आज के जीवन से असामंजस्य की पीड़ा

अभिव्यक्त की गई। 'सीढ़ियाँ' उपन्यास में सामाजिक अमान्यता के डर से प्रेम की उपेक्षा के भाव को रचा गया है। 'परछाइयों के पीछे' रूढ़िवादिता एवं प्राचीन पारिवारिक संस्कारों से बंधी नारी पर केन्द्रित उपन्यास है। 'परसों के बाद' उपन्यास में देश व समाज की उपेक्षा के फलस्वरूप पलायन होती प्रतिभा को उजागर किया गया है। 'ये छोटे महायुद्ध' में पीढ़ी अंतराल के फलस्वरूप तकरार-असहमति से उपजे संघर्ष को प्रकट किया गया है। 'उम्र एक गलियारे की', उपन्यास में सुनंदा के रूप में अधिकार सचेता नारी को चित्रित किया गया है। 'खामोश होते सवाल' पति प्रताड़ना से सचेत स्त्री का उपन्यास है। 'मीनारें' उपन्यास में शिक्षण संस्थाओं की आड़ में पनपते भ्रष्टाचार और अव्यवस्था को प्रदर्शित किया है। 'कोडवर्ड' उपन्यास में भूली भटकी नारी के प्रति तिरस्कार के भाव की अपेक्षा समाज को आत्मीयता का व्यवहार करना चाहिए। इस भाव को अभिव्यक्त किया गया है। 'कर्क रेखा' उपन्यास में ऐसी मध्यमवर्गीय स्त्री का चित्रण है जो पति की उपेक्षा और स्वयं के अकेलेपन से आहत है। 'क्योंकि' उपन्यास मध्यमवर्गीय समाज के व्यक्ति की रूढ़िवादी मनोवृत्ति पर केन्द्रित है। 'हर दिन इतिहास' उपन्यास वर्तिका के रूप में नारी के उदात्त रूप को सामने लाता है।

डॉ. कविता चाँद गुडे लिखती है कि साठोत्तरी लेखिकाओं में शशिप्रभा शास्त्री जी की अपनी अलग पहचान है। आपके उपन्यास विभिन्न आयामों को स्पर्श करते हैं। 'वीरान रास्ते और झरना' शशि जी का पहला उपन्यास है। इस उपन्यास में हीन भावना से त्रस्त युवती एवं अनमेल विवाह से उपजे दुष्परिणामों पर आधारित है जो प्रेमचन्द के यथार्थवादी उपन्यासों की कड़ी कहा जा सकता है। नायिका अचला अपनी माँ और चाचा के अवैध सम्बन्धों के कारण हीन भावना से ग्रस्त हो जाती है और आवारा लड़के अमर से निकटता बढ़ाती है। अचला इस हीन भावना से ग्रसित है कि वह खराब माँ की बेटी है। अतः वह किसी का घर नही बसा सकती। इसलिये वह अमर जैसे आवारा लड़के का साथ जानबूझ कर पकड़ती है। अन्त में वह अपने पूर्व प्रेमी शैलेन्द्र जो विदेश से ऊँची डिग्री लेकर आता है, उसके साथ विवाह में बंध जाती है।

'अमलतास' स्वतन्त्रता पूर्व रजवाड़ों की नारियों की व्यथा को केन्द्रित कर रचा गया उपन्यास है। सामन्ती विलासिता की उत्पीड़ा, कामुकता एवम् एय्याशी का चित्रण तद्युगीन काल परिवेश के खोखलेपन को उद्घाटन करता है। नायिका कामदा भौतिक सुख सुविधाओं के अमलतास रूपी सुनहरे पिंजड़े में मैना के समान कैद है। ''मैं चाहे कही रहूँ, मेरी धरोहर को मेरे महल में ही रहना होगा।"2 कामदा के पति हरदेव का उक्त कथन सामन्ती जकड़न एवं नारी परतन्त्रता को बखूबी अभिव्यक्त करता है। शशिप्रभा शास्त्री इस उपन्यास के माध्यम से कीर का पिंजर खोलने की वकालत करती नजर आती है। कामदा सामन्ती पद वैभव अर्थात् दीवान पत्नी का पद त्याग निराश्रितों की संस्था से जुड़ती है। जो समाप्त होते सामन्ती रजवाड़ों की नारी स्वतंत्रता एवं उसके अधिकारों की पुकार है। "कामदा कठोर श्रम को जीविका का आधार बना श्रृद्धा का भाजन बनती है। यही उपन्यास की महानतम उपलब्धि है।"3

दो पुरूषों और एक नारी के त्रिकोणात्मक प्रणय को कथ्य आधार बनाकर लिखा 'नावें' उपन्यास अतीत जीवन की व्यथा में आज के जीवन से

असामंजस्य की पीड़ा को अभिव्यक्त करता है। डॉ. कविता चाँद गुडे के शब्दों में, "शशिप्रभा जी ने 'नावें' में आर्थिक विपन्नता से जन्मी विवशता भरी भटकन, आदर्श प्रेम और वैवाहिक समबन्धों के बिखराव, नई पीढ़ी के घरेलू ठण्डेपन से बाहर जीने की तड़प को व्यवहारिक दृष्टि से प्रस्तुत किया है।"4 मालती उपन्यास की नायिका है जो अपने जीवन के प्रारम्भिक पड़ाव में पारिवारिक उपेक्षा के बावजूद अपने पैरों पर खड़ी होती है। सोम जी नामक व्यक्ति के व्यक्तित्व से प्रभावित हो जाती है और उससे गर्भधारण कर लेती है, परन्तु सोम जी समाज भय से उसे सुदूर भौतिक सुख सम्पन्न स्थान पर रखना चाहते हैं, लेकिन मालती इन्कार कर देती है। बाद में वह बच्ची को जन्म देती है और आधुनिक विचारों वाले युवक विजयेश से विवाह करती है। परन्तु मालती के विजयेश के साथ असमर्पण के कारण दोनों के मध्य दाम्पत्य में ठहराव, अवसाद, निराशा के भाव घर कर लेते हैं। कुल मिलाकर इस उपन्यास में "मनोविज्ञान की सेक्स फ्रिजीडिटी का संकेत परोक्ष रूप से है।"5

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत शशि जी का 'सीढ़ियाँ' उपन्यास कथ्य एवं शैली की दृष्टि से बेजोड़ है। पूर्वदीप्त शैली मे लिखा गया यह उपन्यास पाठकों को फलप्राप्ति तक बाँधने को में सफल है। सामाजिक समान्यता के डर से प्रेम की उपेक्षा के भाव को उपन्यास का मुख्य कथ्य बनाया गया है। मनीषी उपन्यास की नायिका है जो हतभग्या, अल्पआयु का वैधव्य, ससुराल से तिस्कृत स्त्री है, जो अपनी मनहूसियत की भावना को त्याग कर, माता-पिता के सहयोग से कठोर परिश्रम से चिकित्सक बनती है और अपना जीवन रूग्ण व्यक्तियों की सेवा-शुश्रूषा में लग जाती है, परन्तु सुपर्णा नामक मरीज ने उसे जिम्मेदारियों का बोझ दे दिया। वह उसे बखूबी निभाती है और उसके पुत्र सुकेत को पैरों पर खड़ा करती है। सुकेत के कानपुर जाने और वहाँ बीमार पड़ने से कथा में नया मोड़ आ जाता है। सुकेत मनीषी से विवाह करना चाहता है। "तुम मेरी सब कुछ हो, मनि, मासी, मित्र, प्रेयसी।"6 परन्तु मनीषी धर्मशास्त्र. एवं संस्कृति का वास्ता देकर इन्कार करती है। "घर मे घुसे हुए हथिया लिया जारपन।"7 अंत में वह सुकेत का विवाह शारदा नामक युवती से करवा देती है। इस प्रकार 'सीढ़ियाँ' उपन्यास कोरी भावुकता ही नहीं जीवन में यथार्थवादी भी बनने का संदेश देने में सफल रहा है।

'परछाइयों के पीछे' रूढ़िवादिता एवं प्राचीन पारिवारिक संस्कारों के खूँटे से बंधी ऐसी स्त्री की कहानी है, जो पति द्वारा बार-बार छल, कपट, धोखा, लांछित, अपमान किये जाने के बावजूद भी वह उससे बंधी रहती है। उपन्यास की नायिका सुमित्रा अपने सहकर्मी महिपाल से विवाह करती है, परन्तु महिपाल अजीब मनोवृति वाला व्यक्ति है। उसके व्यक्तित्व में तमाम दुर्गुण भरे पड़े हैं, परन्तु फिर भी सुमित्रा उसके पास बार-बार जाती है और अपने बच्चों को पाने की कोशिश करती है। वह विधि कानून का सहारा लेने से डरती है। इसी मनोवृत्ति का उसका पति फायदा उठाता है, परन्तु वह परम्परागत भारतीय नारी की भाँति समझौता कर लेती है। गोपाल राय के शब्दों में, "नायिका पढ़ी लिखी और आर्थिक रूप से स्वालम्बी होने पर भी वह मानसिक रूप से परम्परागत नारी चरित्र संहिता से आकांत है।"8

'परसों के बाद' देश और समाज की उपेक्षा के फलस्वरूप पलायन होती प्रतिभा की समस्या को अभिव्यक्ति करने वाला उपन्यास है, जिसमें देश

की मेधा की पलायनवृति एवं उसके लिए हेतुभूत स्थिति परिस्थिति का खुलासा कर उस स्थिति को भी रेखांकित किया है, जिसमें देश के भविष्य की चिन्ता की गई है। उपन्यास की पात्र माधवी कहती है, "विदेश जाने के विचार पहले भी नहीं थे और बाद में भी नहीं हुए हैं। ये विचार तो परिस्थितियों ने पैदा किये है।"9 उपन्यास का नायक शंकर एक आदर्शवादी एवं देशभक्त युवा वैज्ञानिक है, परन्तु देश में उसकी प्रतिभा की कद्र न होने एवं कार्य की स्वतंत्रता एवं सुविधा नगण्य होने के फलस्वरूप वह विदेश पलायन को मजबूर होता है। शंकर के पिता चंद्राजी इस स्थिति पर कहते हैं, "ये मस्तिष्क अपने देश से भिन्न न जाने किस देश की पथरीली मिट्टी में फूल खिलायेंगे, उसे जगमगायेंगे। अपने पीछे ये दीये कितना ढेर अंधकार छोड़ जाते है।"10

'ये छोटे महायुद्ध' में पीढ़ी अंतराल के कारण तकरार-असहमति मे उपजे दो पीढ़ियों की संघर्ष की कथा है। उपन्यास नायिका गार्गी समयानुसार अपने व्यवहार को बदलकर देश कालानुरूप नहीं कर पाती, फलस्वरूप अपनी संतानों के साथ वह तालमेल नहीं बैठा पाती और उनमें आपसी टकराव होता है और उसे आश्रय का सहारा लेना पड़ता है। "गार्गी और लोपा दो पीढ़ियों का, वैचारिक स्तर पर दो वर्गों का प्रतिनिधि करती है, जिनके मध्य अनावश्यक टकराव रहता है।"11 कुल मिलाकर यह उपन्यास पुरानी पीढ़ी और नयी पीढ़ी के आपसी वैचारिक सामंजस्य के संघर्ष की पीड़ा को अभिव्यक्त करता है।

पति की उपेक्षा के कारण असफल दाम्पत्य जीवन के कारण स्त्री विद्रोह की विषय वस्तु 'उम्र एक गलियारे की' उपन्यास में सुनंदा के रूप में अधिकार सचेता नारी को चित्रित किया गया है। शास्त्री जी का यह उपन्यास प्रसाद के 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक की याद ताजा कर देता है, जिसमें स्त्री को विवाह के विषय में जीवन साथी के वरण का अधिकार स्त्री को प्राप्त होना चाहिए। आज प्रसाद एवं श्रीमती शास्त्री के बीच का समय अंतराल यह संकेत करता है कि स्त्री की दशा आज भी ज्यों की त्यों है। नायिका सुनंदा पति व मोहन देवेश के मध्य झुलती है। कविता चाँदगुडे के शब्दों में, "सुनंदा मे अपने लिए दो घर तय किये एक नवल के साथ और दूसरा देवेश के साथ।"12

सारतः "हमारे पुरूष और स्त्रियों के लिए पवित्रता के जो अलग-अलग मानदण्ड हैं। उनके पुनर्विचार की अपेक्षा रखती है।"13

'खामोश होते सवाल' पति प्रताड़ना से सचेत स्त्री चेतना का उपन्यास है। उपन्यास की नायिका अनुराधा सदियों से खोखली सामाजिक मान्यताओं, रीति रिवाजों परम्परागत बंधनो से जकड़ी त्रस्त नारी को मुक्त कर नारी अधिकारों के प्रति सचेत बनाती है। असहाय, निराश्रित स्त्रियों के लिए 'नारी निलयम' बना, विधवा, परित्यकता, हतभाग्या स्त्रियों को आश्रय दे, उन्हें स्वालम्बन का पाठ पढ़ाती है। शास्त्री जी का यह कथन परम्परागत पुरूष अधिकारों को सेठ रूपचन्द के इस कथन से नकराती है, "बेटा मेरा दाह संस्कार मेरा यह बेटा ;अनुराधा की ओर संकेतद्ध करेगा।"14

आधुनिक युग में शिक्षा मंदिर व्यक्ति के सम्पूर्ण विकास का केन्द्र न होकर केवल व्यापारिक प्रतिष्ठान और भ्रष्टाचार के अड्डे बन चुके हैं। शिक्षण संस्थाओं की आड़ में पनपते भ्रष्टाचार और अव्यवस्था को उजागर करता शशि जी का उपन्यास 'मीनारे' 1992 में प्रकाशित हुआ, जिसमें प्रेमा दीवान जैसी कर्तव्यपरायण प्राचार्य के कालेज प्रबन्धन के आका अपना मोहरा

बनाकर अपनी मनमानी व्यवस्था लागू करवाना चाहते हैं और अव्यवस्था का सारा उत्तरदायित्व प्राचार्य पर पड़ता है। "यह उपन्यास एक कालेज की इसी व्यापारिक व शोषणधर्मी प्रवृत्ति का लेखा-जोखा है। यहां सारी अवस्था कालेज प्रबन्धकों की आका प्रवृत्ति से जन्म लेती है।"15

आत्मकथात्मक शैली मे लिखा गया उपन्यास 'कोडवर्ड' 1985 में प्रकाशित हुआ, जिसमें भूली भटकी नारी के प्रति तिरस्कार का भाव न रखकर उसके साथ समाज को आत्मीयता का व्यवहार करना चाहिए, ताकि मीना जैसी स्त्रियाँ हीनग्रंथी से मुक्त हो सके।

'कर्करेखा' उपन्यास में मध्यमवर्गीय ऐसी स्त्री की व्यथाकथा का चित्रण है जो विडम्बनापूर्ण जीवनयापन करने के लिए शापित है, जो पति उपेक्षा एवं स्वयं के अकेलेपन से आहत है। ''इस उपन्यास में बेगाने स्थितियों में भी अपनापन कैसे पनपता है। इसका अच्छा चित्रण किया गया है।"16

'क्योंकि' उपन्यास मध्यमवर्गीय समाज के व्यक्ति की रूढ़िवादी मनोवृत्ति को आधार बनाकर लिखा गया है, जिसमें दहेज, आभूषणों का आकर्षण और नवीन पीढ़ी की उच्छृंखलता को चित्रित किया गया है। "यह कृति रूढ़िवादी मनोवृत्ति पर निर्भयता से हथौड़ा चलाती है।"17

'हर दिन इतिहास' उपन्यास में शशिजी ने वर्तिका के रूप में नारी उदात्त रूप को अभिव्यक्त किया है। वर्तिका सचमुच बात्ती की भाँति निःस्वार्थ भाव से जलकर अपने परिवार को स्वयं जलकर रोशन करती है, और स्वयं जीवनभर जलती रहती है एवं अपने पिता के सपनों को पूरा करती है "बाबूजी आप जिस कालेज के मैनेजर है न हम वादा करते है कि पढ़कर हम इसी कालेज में पढ़ाएंगी।"18 वह उदात्त नारी की भाँति त्याग, बलिदान, प्रेम, स्नेह, समर्पण भावों से युक्त होकर अपने समस्त कर्तव्य यथा माँ रूप में, बहन रूप में, भाभी रूप में निर्वहन सफलतापूर्वक कर अन्त में डॉ.. सिन्हा के साथ अपना सुख-दुख बाँट अकेलापन को दूर कर उसकी जीवन संगीनी बनती है।

निष्कर्ष

सारतः डॉ.. शशिप्रभा शास्त्री एक आधुनिक संवेदनशील उपन्यासकार हैं। उनके उपन्यास कथ्य की विविधता के लिए जाने जाते हैं। उनके उपन्यास भारतीय संस्कृति के मानक हैं, जिसमें नारी के विभिन्न रूपों की अभिव्यक्ति देखी जा सकती है। उनकी नारी लाचार, असहाय नहीं बल्कि साहसिक, त्यागी एवं वसुधैव कुटुम्बकम् की धारणा की वाहक है। डॉ.. रूकमणी देवी के शब्दों में, "आदर्श चरित्रों की अवधारणा कर शशिप्रभा ने शाश्वत जीवन मूल्यों के प्रति अपनी आस्था को प्रतिपादित किया है।"19

4 अप्रैल 2000 को इस महान कथाकार की लेखनी भले ही थम गई है परन्तु उनकी लेखनी ने स्त्री विमर्श का जो कथापट तैयार किया वह हिन्दी स्त्री साहित्य को मिला रिक्थ है, जिस पर स्त्री लेखन निरन्तर प्रवाहमान है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. डॉ. हरिशंकर दुबे, महिला उपन्यासकारों की नारी : प्रगति एवं पीड़ा के आयाम, पृष्ठ 15

2. डॉ. शशिप्रभा शास्त्री, अमलतास, पृष्ठ 33, प्रथम संस्करण

3. प्रकर, अप्रैल 1970, पृष्ठ 10

4. डॉ. कविता चाँदगुडे, शशिप्रभा शास्त्री का कथा साहित्य, पृष्ठ 147

5. डॉ.कविता चाँदगुडे, शशिप्रभा शास्त्री का कथा साहित्य

6. डॉ. शशिप्रभा शास्त्री, सीढ़ियाँ, पृष्ठ 227

7. डॉ. शशिप्रभा शास्त्री, सीढ़ियाँ, पृष्ठ 229

8. डॉ. गोपाल राय, हिन्दी उपन्यास का इतिहास
9. डॉ. शशिप्रभा शास्त्री, परसों के बाद, पृष्ठ 48
10. डॉ. शशिप्रभा शास्त्री, परसों के बाद, पृष्ठ 155
11. प्रकर, मार्च 1999, पृष्ठ 36
12. डॉ. कविता चाँदगुडे, शशिप्रभा साहित्य का कथा साहित्य, पृष्ठ 164
13. प्रकर, सितम्बर 2000, पृष्ठ 42
14. शशिप्रभा शास्त्री, खामोश होते सवाल, पृष्ठ 215
15. कश्मीरीलाल, महिला कथाकार : समाजशास्त्रीय एवं भाषिक संकल्पना
16. दिनमान, फरवरी 1984
17. पुस्तक परिचय, नवम्बर 1982, पृष्ठ 23
18. शशिप्रभा शास्त्री, हर दिन इतिहास, पृष्ठ 7
19. डॉ. रूकमणी देवी, डॉ. शशि प्रभा शास्त्री : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, पृष्ठ 133